अर्चना सिंह

गुजरे ज़माने

फिर जीना चाहते हैं
वो गुजरे ज़माने

खाली बैठते हैं तो
याद आ जाते हैं
कुछ दोस्त पुराने

बीत गए कई दशक
अब नहीं आता कोई
पुराना दोस्त मनाने

सब कुछ पाकर भी
कंगाल हैं हम
लगता है लुट गए खजाने

हमने शहर बदल लिया
और सबके बदल गए ठिकाने

खो गयी वो अल्हड़ हँसी
भूल गए वो झूठे बहाने

न जाने वक़्त की
कैसी आँधी चली
खो गए वो दिन सुहाने

काश! जी पाते फिर से
वो बीते हुए फसाने

बसंत की आहट

बसंत की आहट मे
और गर्मियों के स्वागत में
खिलने वाला सेमल का फूल

न खूबसूरती का घमंड
न सुंदर रंग का घमंड
न खुशबु का शोर
बस लालिमा चहुँ ओर

न ईश्वर को भेंट चढ़ता है
न स्त्री के बालों मे सजता है
फिर भी मौसम के स्वागत मे
छटा बिखेरकर फिजाओं
को मधुर बनाकर
देखने वालों को हर्षाता है

सेमल फूल गुणों की खदान है
शीतल सुंदर सेमल फूल
कवियों की कविताओं मे
भी चार चाँद लगाता है

फूलों के समूह मे उसका स्थान नहीं
फिर भी वह दिल को लुभाता है